कृपया मानव एकता गीत अपनी - अपनी संगतो में सुनायें।

मानवता का था वो मसीहा, जन - जन का वो था प्यारा,
युगों – युगों तक ऋणी रहेगा, उनका तो ये जग सारा
मानवता का .....

गुरूघर में था जन्म लिया, गुरूमत उनका आधार बनी,
जीवन साथी बनी राज माँ, जीवन का श्रृंगार बनी,
बाबा बूटा सिंह शहनशाह जी की आँखों का था तारा,
मानवता का ..... (१)

करो शादियाँ सादा संतों, और नशे से दूर रहो,
दूसरों का अपमान व निंदा, और चुगली से दूर रहो,
हर बंदा है रूप प्रभू का, ये ही था उनका नारा,
मानवता का ..... (२)

संतों के इक– इक पैसों की, सुंदर सी संभाल की,
पढनें को खोले स्कूल और कॉलेज, खोले कई अस्पताल भी,
शहर – शहर में भवन बनाकर मिशन का चमकाया तारा,
मानवता का ..... (३)

मानव मूल्यों की खातिर, वो दे अपना बलिदान गये,
अब शरीर ये नहीं रहेगा, ऐसा वो जान गये,
इक– इक संत बनेगा बाबा, ऐसा वर था दे डाला,
मानवता का ..... (४)

(तर्जः १) क्या मिलीये ऐसे लोगों से .....
२) नगरी – नगरी, द्वारे द्वारे.....)